अध्याय-तृतीय

शोध प्रविधि

अध्याय - तृतीय

शोध प्रविधि

3.0 भूमिका -

अनुसंधान या शोधकार्य में निश्चित और सही दिशा की ओर अग्रसर होने के उद्देश्य से यह आवश्यक होता है कि शोध प्रबंध की व्यवस्थित रूपरेखा तैयार की जायें, क्योंकि यह रूपरेखा ही शोधकार्य में निश्चित दिशा प्रदान करती है। इसमें प्रतिदर्श चयन की अपनी विशेष भूमिका होती है। इसके बाद उपकरणों एवं तकनीक का चयन भी महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसी आधार पर प्रदत्तों का संकलन किया जाता हैं। इसके पश्चात् उपयुक्त सांख्यिकीय विधि के माध्यम से प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या कर निष्कर्ष निकाला जाता है तब कहीं जाकर एक शोधकार्य पुरा हो पाता है।

पी.वी.युंग के अनुसार-

अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्थित विधि है, जिनके द्वारा नवीन तथ्यों की खोज तथा प्राचीन तथ्यों की पुष्टि की जाती है तथा उनके उन क्रमों पारस्परिक संबंधों कारणात्मक व्याख्याओं तथा प्राकृतिक नियमों का अध्ययन करती है जो कि प्राप्त तथ्यों को निर्धारित करते हैं।

3.1 समस्या कथन-

"बी.एड्. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की सामाजिक-सांस्कृतिक रूपरेखा एवं अध्यापन अभिवृत्ति के मध्य संबंध का अध्ययन"

3.2 न्यादर्श का चयन–

किसी भी अनुसंधानकर्ता को अपने शोधरूपी भवन को बनाने के लिए न्यादर्श रूपी आधारशिला की आवश्यकता होती है। प्रस्तुत शोधकार्य के लिए उपकरण के रूप में डॉ. एस.पी. अहलुवालिया द्वारा निर्मित शिक्षक अभिवृत्ति सूची का उपयोग किया गया। न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। अनुसंधानकर्ता ने स्वयं महाविद्यालय में जाकर शिक्षक अभीवृत्ति सूची भरवाई। सामाजिक–सांस्कृतिक रूपरेखा जानने के लिए 6 साल का चयन किया और उससे सामाजिक–सांस्कृतिक रूपरेखा जानने की कोशिश की।

अहमदनगर जिला में 14 तहसील है, इसमें से दो तहसील (राहाता, संगमनेर) का यादृच्छिक विधि से चयन किया। संगमनेर तहसील में एक शासकीय बी.एड्. महाविद्यालय है और राहाता तहसील में एक अशासकीय बी.एड्. महाविद्यालय है। संगमनेर शासकीय बी.एड्. महाविद्यालय में 80 शिक्षक प्रशिक्षणार्थी है और प्रवरा ग्रामीण शिक्षणशाख अशासकीय बी.एड्. महाविद्यालय में 100 शिक्षक प्रशिक्षणार्थी है।

प्रस्तुत अनुसंधान में सामाजिक–सांस्कृतिक रूपरेखा जानने के लिए 6 साल के दोनों महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षणार्थीयों का चयन किया गया और अध्यापन अभिवृत्ति जानने के लिए दोनो महाविद्यालयों के 2008–09 के शिक्षक प्रशिक्षणार्थीयों का चयन किया गया।

तालिका क्रमांक-3.1

6 साल की संगमनेर महाविद्यालय की सामाजिक-सांस्कृतिक रूपरेखा

संगमनेर शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय, संगमनेर

Year (वर्ष)	Sex (लिंग)		Caste (जाति)			Area (क्षेत्र)	
	Male (पुरूष)	Female (स्त्री)	Upper caste (वरिष्ठ जाति)	Lower caste (कनिष्ठ जाति)		Rural (ग्रामीण)	Urban (शहरी)
				पिछड़ा वर्ग	अनु. जाति		
2003-04	40	40	33	18	29	47	36
2004-05	36	44	31	17	32	74	06
2005-06	34	46	30	19	31	79	01
2006-07	33	47	28	22	30	79	01
2007-08	33	47	23	20	37	79	01
2008-09	32	48	22	24	34	78	02

तालिका क्रमांक-3.2

6 साल की प्रवरा ग्रामीण महाविद्यालय की सामाजिक-सांस्कृतिक रूपरेखा

प्रवरा ग्रामीण शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय, प्रवरानगर, राहाता

Year (वर्ष)	Sex (लिंग)		Caste (जाति)			Area (क्षेत्र)	
	Male (पुरूष)	Female (स्त्री)	Upper caste (वरिष्ठ जाति)	Lower caste (कनिष्ठ जाति)		Rural (ग्रामीण)	Urban (शहरी)
				पिछड़ा वर्ग	अनु. जाति		
2003-04	46	34	46	11	23	47	33
2004-05	42	38	37	18	25	60	20
2005-06	55	45	54	18	28	77	23
2006-07	47	53	48	23	29	85	15
2007-08	45	55	47	13	40	84	16
2008-09	38	62	45	10	45	86	14

तालिका क्रमांक-3.3

शिक्षक अभिवृत्ति- 2008-09 साल के दोनों महाविद्यालय के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी

महाविद्यायल का नाम	छात्र संख्या	Sex (लिंग)		Caste (जाति)		Area (क्षेत्र)	
		Male (पुरूष)	Female (स्त्री)	Upper Caste (वरिष्ठ जाति)	Lower caste (कनिष्ठ जाति)	Rural (ग्रामीण)	Urban (शहरी)
1) संगमनेर शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय संगमनेर	62	32	30	26	36	60	02
2) प्रवरा ग्रामीण शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय प्रवरानगर	76	29	47	37	39	64	12
कुल छात्र संख्या	138	61	77	63	75	124	14

3.4 शोध के चर -

अनुसंधान में घटना से संबंधित कारकों को स्पष्ट रूप से समझना नितांत आवश्यक होता है, सही एवं निश्चित व्यवहार का निरीक्षण तब ही संभव है जबकि उक्त कारकों पर नियंत्रण किया जा सके, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निरीक्षण करने वाला व्यवहारकों प्रभावित करते है, इन कारकों को ही चर कहते हैं।

गैरेट के शब्दों में "चर ऐसी विशेषताएँ तथा गुण होते है, जिनमें मात्रात्मक विभिन्नतायें स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है तथा जिनमें किसी एक आयाम पर परिवर्तन होते रहते हैं।"

- **स्वतंत्र चर–**

  लिंग, क्षेत्र, जाति

- **आश्रित चर –**

  अभिवृत्ति

शोध में प्रयुक्त चरों का स्तर या समूह–

शोध में उपयोग किये गये स्वतंत्र चरों को निम्नानुसार समूह में विभक्त किया गया है।

लिंग– लिंग को दो समूहों में विभक्त किया गया है।

समूह–1 पुरूष

समूह–2 स्त्री

क्षेत्र– क्षेत्र को दो समूहों में विभक्त किया गया है।

समूह–1– शहरी

समूह–2 ग्रामीण

जाति– जाति को दो समूहों में विभक्त किया गया है।

समूह–1 वरिष्ठ जाति

समूह–2 कनिष्ठ जाति

3.5 लघु शोध संबंधी उपकरण–

किसी भी शोधकार्य में उपकरणों का बहुत महत्व होता हैं क्योंकि इन उपकरणों के माध्यम से ही आवश्यक आँकड़े एकत्रित किए जाते हैं। उपकरणों का चयन एवं उपयोग बड़ी सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। जिससे परिणाम की विश्वसनीयता पर संदेह न किया जा सके।

प्रस्तुत शोध में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन अभिवृत्ति जानना यह उद्देश्य था। प्रदत्तों का संग्रह करने के लिए निम्नलिखित प्रमाणीकृत उपकरण का उपयोग किया गया।

उपकरण–

अध्यापक अभिवृत्ति सूची–डॉ. एस.पी. अहलूवालिया

अध्यापक अभिवृत्ति सूची–

डॉ. एस.पी. अहलूवालिया की अध्यापक अभिवृत्ति सूची का प्रदत्त संकलन करने के लिए उपयोग किया गया है।

प्रस्तुत सूची में 90 कथन है। इनके कोई पूर्व निर्धारित सही या गलत उत्तर नहीं है। इनके द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि अध्यापकों की अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति के प्रति व्यक्तिगत विचारों को लिया है। प्रत्येक कथन को पढ़िये तथा निर्णय कीजिए कि आपका इसके संबंध में क्या विचार या अनुभव है ऐसा करने के लिए आपको उत्तर पत्र में दिये पांच खाने में से किसी एक पर सही का चिन्ह (✓) अंकित करना है यदि आप कथन से पूर्ण सहमत है तो उसे कथन के क्रम नं. एक के सामने पहले खाने में (✓), यदि सहमत है तो दूसरे खाने (✓) में, यदि अनिश्चित या द्विधा में है तो तीसरे खाने (✓) में, यदि असहमत है तो चौथे खाने (✓) में, तथा यदि पूर्ण असहमत हो तो पांचवे खाने (✓) में सही का चिन्ह अंकित करें।

यह सूची में 90 कथन का समावेश किया है। वह छः भागों में विभक्त है। हर भाग में 15 कथन है, जो शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति को दर्शाता है। वह छः भाग निम्नलिखित है।

1. शिक्षा व्यवसाय
2. कक्षा अध्यापन
3. बाल केन्द्रित शिक्षा
4. शिक्षा प्रक्रिया
5. विद्यार्थी
6. शिक्षक

90 कथनों में से 43 कथन अनुकूल (Favourable) है, तथा 47 कथन प्रतिकूल (Unfavourable) है। अनुकुल तथा प्रतिकूल कथन शिक्षा व्यवसाय, कक्षा अध्यापन, बाल केन्द्रित शिक्षा, शिक्षा प्रकिया, विद्यार्थी, शिक्षक यह छः भागों में मापा गया है।

तालिका में अनुकूल (Favourable) एवं प्रतिकूल (Unfavourable) कथन का विवरण दिया गया है।

तालिका क्रमांक-3.4 अध्यापक-अभिवृत्ति सूची

क्र.	क्षेत्र		अनु. क्रमांक	कुल योग
1.	शिक्षा व्यवसाय	F*	1,8,20,33,41,66,85	7
		UF*	13,34,46,48,60,72,79,36	8
2.	कक्षा शिक्षा	F*	2,9,14,17,42,47,53,67	8
		UF*	35,38,59,61,65,73,84	7
3.	बाल केन्द्रित शिक्षा	F*	3,11,16,21,27,39,49,62,64,80	10
		UF*	25,54,75,83,90	5
4.	शिक्षा प्रकिया	F*	15,28,36,43,50,55,71,87	8
		UF*	4,7,10,32,63,74,76	7
5.	विद्यार्थी	F*	5,44,81,82,89	5
		UF*	18,22,29,31,37,51,56,58,70,77	10
6.	शिक्षक	F*	6,23,40,52,88	5
		UF*	12,19,24,26,30,45,57,68,69,78	10

F* = Favourable SA=4, A=3, V=2, D=1, SD=0

UF* = Unfavourable SA=0, A=1, V=2, D=3, SD=4

3.6 शोध उपकरणों का प्रशासन एवं फलांकन–

इन उपकरणों के समस्त प्रशासन के लिए 15 दिन का समय लगा। 22 जनवरी से 08 फरवरी 2009 में शोधकर्ता द्वारा फिल्ड वर्क किया गया। महाविद्यालयों के प्रधानाचार्य के साथ चर्चा करने के बाद शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को प्रश्नावली दी गई।

उपकरण (अध्यापक अभिवृत्ति सूची) संबंधित शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को निर्देश दिये गये।

- प्रदत्त जानकारी का उपयोग केवल अनुसंधान कार्य में ही किया जाएगा।
- प्रश्नावली पर निर्धारित स्थान पर अपना नाम, लिंग, आयु, उम्र, महाविद्यालय का नाम, शैक्षणिक पात्रता आदि की पूर्ति के लिये कहा गया।
- समय सीमा का कोई खास बंधन नहीं।
- सभी कथनों का प्रत्युत्तर दीजियेगा।
- प्रश्नावली वापस करने के लिए कहा गया।

3.7 प्रस्तुत लघुशोध उपकरण के अंकन की विधि–

लघुशोध कार्य के लिए प्रमाणित डॉ. एस.पी. अहलुवालिया की शिक्षक अभिवृत्ति सूची का उपयोग किया गयां है। उसमें 90 कथन है वह छः घटक में विभक्त किये गये है। 90 कथन अनुकूल (Favourable) तथा प्रतिकूल (Unfavourable) यह दो भागों में विभक्त किये है। 43 कथन अनुकूल है तथा 47 कथन प्रतिकूल है। अनुकूल कथन के लिए निम्न अंक दिये है– पूर्णतः सहमत के लिए चार अंक (SA=4), सहमत के लिए तीन अंक (A=3), अनिश्चित के लिए दो अंक (V=2), असहमत के लिए अंक (0=1), पूर्णतः असहमत के लिए शून्य अंक (SD=0), प्रतिकूल कथन के लिए–पूर्णतः सहमत के लिए शून्य

अंक (SA=0), सहमत के लिए एक अंक (A=1), अनिश्चित के लिए दो अंक (V=2), असहमत के लिए तीन अंक (D=3), पूर्णतः असहमत के लिए चार अंक (SD=4)

प्रस्तुत शोध में अनुसंधानकर्ता ने स्कोअरिंग करने के लिए अनुकूल एवं प्रतिकूल कथन की Key (उत्तर पत्रिका) बनाया। अंत में सभी का कुल योग किया गया।

3.8 प्रदत्तों के संकलन में उत्पन्न कठिनाईयाँ–

प्रदत्तों के संकलन में निम्नांकित कठिनाईयाँ आयी–

- शिक्षक प्रशिक्षणार्थीयों की परीक्षा नजदीक आयी थी इसीलिए उनके पास वक्त नहीं था, इसीलिए यह अध्यापक अभिवृत्ति सूची उनके घर में भरने के लिए दे दी गयी।
- कुछ शिक्षक प्रशिक्षणार्थी दूसरें दिन आये नहीं इसीलिए यह प्रश्नावली उनके पास ही रह गयी।
- बी.एड्. महाविद्यालय के प्राध्यापक भी अपना किमती वक्त बर्बाद नहीं कराना चाहते थे, क्योंकि परीक्षा नजदीक आयी थी और उनको अध्यापन भी करवाना था।
- सामाजिक–सांस्कृतिक रूपरेखा जानने के लिए महाविद्यालय के क्लार्क उनका शालेय दत्तर नहीं दे रहे थे, इसीलिए उनके प्रधानाचार्य का हस्ताक्षर लेना पड़ा, इसीलिए दो दिन गये।
- महाविद्यालयों में 26 जनवरी कार्यक्रम की तालिम (तैयारी) चल रही थी, इसमें कुछ शिक्षक प्रशिक्षणार्थी होने के कारण प्रदत्त संकलन में बाधा आयी।

3.9 प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ–

शोध समस्या से संबंधित प्रदत्तों के सारणीयन करने के उपरान्त उनमें उचित परिणाम प्राप्त करने के लिए उपयुक्त सांख्यिकीय का

प्रयोग किया जाता है। जिससे निष्कर्षो तथा परिणामों का विश्वसनीयता एवं वैध रूप में प्रस्तुत किया जा सकें।

प्रस्तुत अध्ययन में लिंग, क्षेत्र, जाति, शासकीय-अशासकीय महाविद्यालय इसमें और अध्यापन अभिवृत्ति के मध्य अंतर देखने के लिए मध्यमान, प्रमाण विचलन, 'टी' मान प्रसरण विश्लेषण इन सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया।

सामाजिक सांस्कृतिक रूपरेखा जानने के लिए कोई भी सांख्यिकीय प्रविधियाँ का उपयोग नहीं किया।